This Booklet contains 16 printed pages.
इस पुस्तिका में 16 मुद्रित पृष्ठ हैं।

AK14II

Test Booklet No.
परीक्षा पुस्तिका संख्या

PAPER—II / प्रश्न-पत्र—II

SANSKRIT LANGUAGE SUPPLEMENT / संस्कृत भाषा परिशिष्ट

PART—IV & V / भाग—IV & V

Test Booklet Code
परीक्षा पुस्तिका संकेत

O

Do not open this Test Booklet until you are asked to do so.
इस परीक्षा पुस्तिका को तब तक न खोलें जब तक कहा न जाए।
Read carefully the Instructions on the Back Cover (Pages 15 & 16) of this Test Booklet.
इस परीक्षा पुस्तिका के पिछले आवरण (पृष्ठ 15 व 16) पर दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
For Instructions in Sanskrit see Page 2 of this Booklet.
संस्कृत में निर्देशों के लिए इस पुस्तिका का पृष्ठ 2 देखें।

Instructions for Candidates :

1. This booklet is a supplement to the Main Test Booklet for those candidates who wish to answer **EITHER** Part—IV (Language—I) **OR** Part—V (Language—II) in **SANSKRIT** language, but **NOT BOTH**.
2. Candidates are required to answer Part—I and Part—II OR III from the Main Test Booklet and Parts—IV and V from the languages chosen by them.
3. Questions on English and Hindi languages for Part—IV and Part—V have been given in the Main Test Booklet. Language Supplements can be asked for separately.
4. Use **Blue/Black Ballpoint Pen only** for writing particulars on this page/marking responses in the Answer Sheet.
5. The CODE for this Language Booklet is **O**. Make sure that the CODE printed on **Side-2** of the Answer Sheet and on your Main Test Booklet is the same as that on this Language Supplement Booklet. In case of discrepancy, the candidate should immediately report the matter to the Invigilator for replacement of the Language Supplement Test Booklet.
6. This Test Booklet has **Two Parts**—IV and V, consisting of **60** Objective-type Questions and each carrying 1 mark :
   Part-IV : Language-I (Sanskrit) (Q. Nos. 91-120)
   Part-V : Language-II (Sanskrit) (Q. Nos. 121-150)
7. Part-IV contains 30 questions for Language-I and Part-V contains 30 questions for Language-II. In this Test Booklet, only questions pertaining to Sanskrit Language have been given. **In case the language(s) you have opted for as Language-I and/or Language-II is a language other than Sanskrit, please ask for a Test Booklet that contains questions on that Language. The languages being answered must tally with the languages opted for in your Application Form.**
8. **Candidates are required to attempt questions in Part-V (Language-II) in a language other than the one chosen as Language-I (in Part-IV) from the list of languages.**
9. Rough work should be done only in the space provided in the Test Booklet for the same.
10. The answers are to be recorded on the OMR Answer Sheet only. Mark your responses carefully. No whitener is allowed for changing answers.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

1. यह पुस्तिका मुख्य परीक्षा पुस्तिका की एक परिशिष्ट है उन परीक्षार्थियों के लिए जो या तो भाग—IV (भाषा—I) **या** भाग—V (भाषा—II) का उत्तर संस्कृत भाषा में देना चाहते हैं, लेकिन दोनों नहीं।
2. परीक्षार्थी भाग—I, एवं भाग—II या III के उत्तर मुख्य परीक्षा पुस्तिका से दें और भाग—IV व V के उत्तर उनके द्वारा चुनी भाषाओं से।
3. अंग्रेज़ी व हिन्दी भाषा पर प्रश्न मुख्य परीक्षा पुस्तिका में भाग—IV व भाग—V के अन्तर्गत दिए गए हैं। भाषा परिशिष्टों को आप अलग से माँग सकते हैं।
4. इस पृष्ठ पर विवरण अंकित करने एवं उत्तर-पत्र पर निशान लगाने के लिए **केवल नीले/काले बॉलपॉइंट पेन** का प्रयोग करें।
5. इस भाषा पुस्तिका का संकेत **O** है। यह सुनिश्चित कर लें कि इस भाषा परिशिष्ट पुस्तिका का संकेत, उत्तर-पत्र के **पृष्ठ-2** एवं मुख्य परीक्षा पुस्तिका पर छपे संकेत से मिलता है। अगर यह भिन्न हो, तो परीक्षार्थी दूसरी भाषा परिशिष्ट परीक्षा पुस्तिका लेने के लिए निरीक्षक को तुरन्त अवगत कराएँ।
6. इस परीक्षा पुस्तिका में दो भाग—IV और V हैं, जिनमें **60** वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं तथा प्रत्येक 1 अंक का है :
   भाग-IV : भाषा-I (संस्कृत) (प्रश्न सं० 91-120)
   भाग-V : भाषा-II (संस्कृत) (प्रश्न सं० 121-150)
7. भाग-IV में भाषा-I के लिए 30 प्रश्न और भाग-V में भाषा-II के लिए 30 प्रश्न दिए गए हैं। इस परीक्षा पुस्तिका में केवल संस्कृत भाषा से सम्बन्धित प्रश्न दिए गए हैं। **यदि भाषा-I और/या भाषा-II में आपके द्वारा चुनी गई भाषा(एँ) संस्कृत के अलावा है/हैं, तो कृपया उस भाषा वाली परीक्षा पुस्तिका माँग लें। जिन भाषाओं के प्रश्नों के उत्तर आप दे रहे हैं वह आवेदन पत्र में चुनी गई भाषाओं से अवश्य मेल खानी चाहिए।**
8. **परीक्षार्थी भाग-V (भाषा-II) के लिए, भाषा सूची से ऐसी भाषा चुनें जो उनके द्वारा भाषा-I (भाग-IV) में चुनी गई भाषा से भिन्न हो।**
9. रफ़ कार्य परीक्षा पुस्तिका में इस प्रयोजन के लिए दी गई खाली जगह पर ही करें।
10. सभी उत्तर केवल OMR उत्तर-पत्र पर ही अंकित करें। अपने उत्तर ध्यानपूर्वक अंकित करें। उत्तर बदलने हेतु श्वेत रंजक का प्रयोग निषिद्ध है।

Name of the Candidate (in Capitals) : ______________________
परीक्षार्थी का नाम (बड़े अक्षरों में)

Roll Number (in figures) : ______________________
अनुक्रमांक (अंकों में)
(in words) : ______________________
(शब्दों में)

Centre of Examination (in Capitals) : ______________________
परीक्षा-केन्द्र (बड़े अक्षरों में)

Candidate's Signature : ______________ Invigilator's Signature : ______________
परीक्षार्थी के हस्ताक्षर निरीक्षक के हस्ताक्षर

Facsimile signature stamp of Centre Superintendent ______________________

16-II

अस्यां पुस्तिकायां 16 पृष्ठानि सन्ति।

AK14II

परीक्षा-पुस्तिका-संकेतकम्

O

प्रश्नपत्रम्—II

संस्कृत-भाषा-परिशिष्टम्

भागः — IV एवं V

यावन्न न कथ्यते तावत् इयं परीक्षा-पुस्तिका न अनावरणीया।

अस्याः परीक्षा-पुस्तिकायाः पृष्ठावरणयोः (पृष्ठे 15 एवं 16) प्रदत्ताः निर्देशाः ध्यानपूर्वकं पठनीयाः।

परीक्षार्थिभ्यो निर्देशाः —

1. इयं पुस्तिका मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकायाः एकं परिशिष्टं तेभ्यः परीक्षार्थिभ्यः अस्ति ये IV (भाषा I) भागस्य **अथवा** V (भाषा II) भागस्य परीक्षां **संस्कृत**भाषया दातुमिच्छन्ति, **न तु द्वयोः भागयोः**।
2. परीक्षार्थिभिः भाग I तथा II अथवा III भागानाम् उत्तराणि मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकातः देयानि अपि च IV तथा V भागानाम् उत्तराणि तैः चिताभिः भाषाभिः।
3. आंग्लभाषायां हिन्दीभाषायां च प्रश्नाः मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकायां IV भागे तथा V भागे च प्रदत्ताः। भाषा-परिशिष्टानि भवद्भिः पृथक्कृतया याचितुं शक्यन्ते।
4. अस्मिन्पृष्ठे च विवरणम् अङ्कयितुम् उत्तर-पत्रे च चिह्नम् अङ्कयितुं **केवलं नील/कृष्णवर्णिकायाः बाल-पाइन्ट-लेखन्याः** प्रयोगः अनुमतः।
5. अस्याः भाषा पुस्तिकायाः संकेतकं **O** वर्तते। एतच्च निश्चेतव्यं यदस्याः भाषा-परिशिष्ट-पुस्तिकायाः संकेतकम् उत्तर-पत्रस्य **पृष्ठ-2** उपरि प्रकाशितेन संकेतेन साम्यं भजति। एतदपि निश्चेतव्यं यत् मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकासंख्या उत्तर-पत्रसंख्या च परस्परं साम्यं भजेते। यदि चात्र किमपि अन्तरमस्ति तदा छात्रेण निरीक्षकमहाभागः सम्प्रार्थनीयः यत्स द्वितीयां भाषा-परिशिष्ट-परीक्षा-पुस्तिकां ददातु।
6. अस्यां परीक्षा-पुस्तिकायां **द्वौ** भागौ स्तः — IV तथा V, एतेषु 60 वस्तुनिष्ठाः प्रश्नाः सन्ति, प्रत्येकं च एकमङ्कं धारयति—

   भागः IV : भाषा I (संस्कृत) (प्रश्न संख्या 91 तः 120 पर्यन्तम्)

   भागः V : भाषा II (संस्कृत) (प्रश्न संख्या 121 तः 150 पर्यन्तम्)
7. IV भाषा I भागे 30 प्रश्नाः, V भाषा II भागे च 30 प्रश्नाः सन्ति। अस्यां च परीक्षा-पुस्तिकायां केवलं संस्कृतभाषया सम्बद्धाः प्रश्नाः सन्ति। **यदि भाषा I उत वा भाषा II इत्येतयोः भवता संस्कृत-अतिरिक्ते भाषे चिते, तदा तद्भाषासम्बद्धा परीक्षा-पुस्तिका याचनीया। यस्याः अपि भाषायाः प्रश्नानाम् उत्तराणि भवता प्रदीयन्ते, सा भाषा नूनम् आवेदनपत्रे अभीष्टभाषाभिः सह संवदेत्।**
8. **परीक्षार्थिभिः भागः V (भाषा II) कृते, भाषातालिकातः सा भाषा चयनीया या तैः भाषा I (भागे IV) चितायाः अभीष्टभाषातः भिन्ना स्यात्।**
9. रफ कार्यं परीक्षा-पुस्तिकायाम् एतत्प्रयोजनार्थं निर्धारितस्थाने एव कार्यम्।
10. सर्वाणि उत्तराणि OMR उत्तर-पुस्तिकायामेव अङ्कनीयानि। सावधानमनसा चैतद् अङ्कनीयम्। उत्तरे परिवर्तनार्थं श्वेत-रञ्जकस्य प्रयोगो निषिद्धः।

परीक्षार्थिनः नाम : ______________________

अनुक्रमाङ्कः (अङ्केषु) : ______________________

(शब्देषु) : ______________________

परीक्षाकेन्द्रम् : ______________________

परीक्षार्थिनः हस्ताक्षरम् : ______________ निरीक्षकस्य हस्ताक्षरम् : ______________

Facsimile signature stamp of Centre Superintendent ______________________

परीक्षार्थिनः निम्नलिखित-भागस्य प्रश्नानाम् उत्तराणि तदैव दद्युः यदि तैः भाषा—I विकल्पे संस्कृतं चितं स्यात्।

भागः —IV : भाषा—I
संस्कृतम्

निर्देशः (प्र० सं० **91-96**) : निम्नलिखितानुच्छेदाधारितानां प्रश्नानां समुचितम् उत्तरं चिनुत—

अथ एकदा भगवान् बोधिसत्त्वः बहुजन्मार्जितपुण्यफलैः शिवीनां राजा बभूव। स बाल्यात् एव वृद्धोपसेवी, विनयशीलः, शास्त्रपारङ्गतः च आसीत्। जनकल्याणकर्मसु रतः असौ पुत्रवत् प्रजाः पालयति स्म। कारुण्य-औदार्यसद्गुणोपेतः स नगरस्य समन्ततः धन-धान्यसमृद्धाः दानशालाः अकारयत्। तत्र अर्थिनां समूहः अन्न-पान-वसन-रजत-सुवर्णादिकानि अभीष्टानि वस्तूनि प्राप्य सन्तुष्टः अभवत्। राज्ञः दानशीलताम् आकर्ण्य देशदेशान्तरेभ्योऽपि जनाः तं देशम् आयान्ति स्म।

अथ कदाचित् दानशालासु विचरन् स राजा बहुधनलाभेन सन्तुष्टानाम् अर्थिनां विरलसङ्ख्यां विलोक्य अचिन्तयत्, 'मम अर्थिनः तु धनलाभमात्रेण सन्तोषं भजन्ते। नूनं ते दानवीराः सौभाग्यशालिनः यान् याचकाः शरीरस्य अङ्गानि अपि याचन्ते।' एवं राज्ञः स्वेषु गात्रेष्वपि निरासक्तिं विज्ञाय सकलं ब्रह्माण्डं व्याकुलं सञ्जातम्।

91. 'परितः' इति अर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(1) समन्ततः

(2) नगरात्

(3) सकलम्

(4) विचरन्

92. के दानवीराः सौभाग्यशालिनः?

(1) ये शरीराङ्गानि अपि दातुम् अवसरं प्राप्नुवन्ति

(2) दानं दातुं सर्वदा उत्साहिनः ये

(3) ये याचकेभ्यः प्रभूतं धनं यच्छन्ति

(4) यैः सह प्रभूतं धनम् अस्ति

93. राजा किं दृष्ट्वा चिन्तनशीलः अभवत्?

(1) याचकानां न्यूनसङ्ख्याम्

(2) अन्यदेशयाचकान्

(3) विशालजनसमूहम्

(4) याचकानां धनप्राप्त्यर्थं लोभम्

94. जनाः अभीष्टानि वस्तूनि कुतः प्राप्नुवन्ति स्म?

(1) सुवर्णापणतः

(2) नगरतः

(3) दानशालातः

(4) अन्नशालातः

95. 'विज्ञाय' पदे प्रत्ययः अस्ति

(1) णिच्

(2) ल्यप्

(3) ण्यत्

(4) यत्

96. ''अथ एकदा भगवान् ... बभूव'' वाक्ये कर्तृपदम् अस्ति

(1) भगवान्

(2) पुण्यफलैः

(3) राजा

(4) शिवीनाम्

निर्देशः (प्र० सं० 97–111) : प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत—

97. 'अर्थज्ञानद्वारा सम्प्रेषणक्षमता-विकासः' इत्यनेन अभिप्रायः अस्ति

(1) व्याकरणात्मकी संरचना

(2) शङ्का-निवारणार्थं शिक्षकैः सह वार्ता पाठ्यक्रमस्य च स्पष्टीकरणम्

(3) शब्दार्थान् प्रयोगान् च ज्ञातुं शब्दकोशस्य उपयोगः

(4) अवबोधनार्थं सूचनायाः आदानं प्रदानञ्च, स्पष्टीकरणं पुनर्रचना च

98. समुचितः भाषाकौशल-क्रमः मन्यते

(1) श्रवणं पठनं भाषणं लेखनम्

(2) भाषणं श्रवणं पठनं लेखनम्

(3) श्रवणं भाषणं लेखनं पठनं च

(4) श्रवणं भाषणं पठनं लेखनञ्च

99. समुचितं भाषाधिगमनं तदैव भवति यदा

(1) जीवन-लक्ष्य-मूल्यानि प्राप्तुं भाषा व्यावहारिकी भवति

(2) भाषाधिगमनं कक्ष्या-नियन्त्रित-परिवेशे कार्यते

(3) लक्ष्यभाषायाः ध्वन्यात्मकता स्वरूपं च मातृभाषानुगुणं भवतः

(4) महाविद्यालयं प्रवेष्टुं संशोधितया भाषया साहाय्यं प्राप्यते

100. केचन छात्राः सूचि-लिखित-उत्तरेभ्यः शीर्षकसहितं समुचितम् उत्तरम् अन्वेष्टुं निर्दिष्टाः। पूर्वम् एव ते सामग्र्याः स्वरूपविषये किञ्चित् प्रष्टुम् इच्छन्ति। इदं किम्?

छात्राः

(1) सूचनान्तरालं पूरयन्तः सन्ति

(2) सक्रियरूपेण सामग्र्याः सन्दर्भे पूर्वानुमान-प्रक्रियायां संलग्नाः

(3) तथ्यानां निरीक्षणे संलग्नाः

(4) प्रश्नोत्तरसन्दर्भे ऊहां (Guess) कुर्वन्ति

101. छात्राः सहर्षं वक्तुम् इच्छन्ति। 'गतिविधिः अधिकः उद्देश्यपूर्णः भवेत्' इत्यर्थं किं समीचीनम्?

(1) कार्य-समाप्त्यर्थम् अभिप्रेरणम्

(2) शब्दकोशं द्रष्टुं प्रेरणम्

(3) समुचित-उच्चारणार्थं निर्देशनम्

(4) लेखन-पठन-सम्बद्ध-कार्यार्थं निर्देशनम्

102. मानवस्य विचाराणां प्रभावि-सम्प्रेषणस्य (लिखित-मौखिक-रूपेण) च मध्ये परस्परं सम्बन्धस्य आधारभूतम् अथवा प्रमुखं तत्त्वं किम्?

(1) व्याकरणात्मक-संरचना

(2) उच्चारणम्

(3) बृहद्-अक्षरीकरणं लेखन-चिह्नाङ्कनं च

(4) स्वरीकरणं बलाघातः च

103. अध्यापकः/अध्यापिका उदाहरणैः सह व्याकरणात्मक-संरचनां पाठयितुं दृश्य-श्रव्य-उपकरणानाम् प्रयोगं करोति। छात्राः प्रभावि-सम्प्रेषणार्थं, लेखनेन भाषणेन वा, एतेषां पाठित-तत्त्वानां सम्यक् उपयोगं कुर्वन्ति। एषा प्रक्रिया अस्ति

(1) रचनात्मकी

(2) पुनरात्मकी

(3) आगमनात्मकी

(4) निगमनात्मकी

104. छात्राणां लिखितकार्यसम्बद्ध-त्रुटि-संशोधनार्थं प्रभावि-प्रक्रिया अस्ति

(1) सङ्केतद्वारा त्रुटि-निर्दर्शनं छात्रेभ्यः च संशोधनार्थम् अभिप्रेरणादानम्

(2) समीचीनानि उत्तराणि प्राप्तुं पुनः पुनः लेखनम्

(3) कृष्णफलके उपयुक्त-उत्तरलेखनम्

(4) अशुद्धीनां पुनः पुनः अवलोकनम्

105. छात्राः प्रायः सर्वत्र एव प्रथमभाषाम् अथवा तृतीयभाषाम् अवगन्तुं वक्तुं च काठिन्यम् अनुभवन्ति। छात्राणां साहाय्यार्थं कः समीचीनः उपायः?

(1) प्रथमभाषा-सम्बद्ध-अन्यभाषायाः शिक्षणम्

(2) भाषा-मूल-वक्तृभिः पाठनम्

(3) द्वितीय-तृतीय-भाषा-कालांशानां वृद्धिः

(4) भाषा-प्रयोग-द्वारा अधिकाधिकः अभ्यासः

106. वाचनप्रक्रियायां नूतन-अपरिचित-शब्दस्य अर्थं ज्ञातुं प्रथमं किं कर्तव्यम्?

(1) सम्पूर्णसन्दर्भं परिशील्य स्वयमेव अर्थं ज्ञातुं प्रयासः

(2) सरलपाठ्यवस्तु-चयनम्

(3) सद्यः एव शब्दकोशपरिशीलनम्

(4) अध्यापकः सहपाठी वा प्रष्टव्यः

107. उच्चस्तरीय-पठन-अवबोधन-सन्दर्भे कानि तत्त्वानि प्रमुखानि?

(1) छात्रभाषया पुनर्लेखनं, रिक्तस्थानपूर्तिः पाठ्यवस्तु-सम्बद्ध-विभिन्नार्थाः

(2) छात्रभाषया पुनर्लेखनं, पूर्णवाक्यैः पाठ्यवस्तु-सम्बद्ध-भावस्पष्टीकरणं, प्रमुखशब्दानां च विभिन्नेषु सन्दर्भेषु प्रयोगः

(3) बिन्दुलेखनं, पाठ्यवस्तु-सम्बद्ध-प्रमुखशब्द-चयनम्, पाठ्यवस्तुनिहिताः विभिन्नार्थाः

(4) पाठ्यवस्तु-सम्बद्ध-प्रमुखशब्दानां छात्रभाषया पुनर्लेखनम्

108. लिखितानुच्छेदस्य आकलनार्थं प्रथमं सोपानम् अस्ति

(1) शब्दसमृद्धिः

(2) व्याकरणम्

(3) शब्दसीमा

(4) विषयवस्तु-सार्थक्यं विचाराभिव्यक्तिः च

109. सन्दर्भवैविध्य-गतिविधिप्रयोग-प्रतिपुष्टि-इत्यादीनां दृष्ट्या किम् अनुदेशनं छात्रेभ्यः अधिकान् अवसरान् प्रददाति?

(1) प्रत्यक्षम्

(2) दूरस्थम्

(3) अभिक्रमितम् (Programmed)

(4) सङ्गणक-सम्बद्धम् (Computer-aided)

110. सा द्वि-भाषि-कक्ष्या लाभकारिणी भवति यत्र छात्राः स्वमूलभाषया (Native language) लक्ष्यभाषया च परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति। कारणम् अस्ति

(1) प्रत्येकं भाषायां भिन्न-भिन्न-गतिविधयः विद्यन्ते

(2) छात्राः स्वभाषया वक्तुम् एव प्रेरिताः भविष्यन्ति, अतः सौविध्यम्

(3) भाषाद्वयं वक्तुं छात्राः अभिप्रेरिताः भवन्ति

(4) पृथक् प्रायोजनार्थं सारल्यं भवति अवसराः च प्राप्यन्ते

111. कोऽपि छात्रः/कापि छात्रा अधिगतज्ञानं प्रयोक्तुम् असमर्थः/असमर्था। यथा; अनुवादप्रक्रियार्थम् उपयुक्त-शब्दचयन-सन्दर्भे। किं समाधानम्?

(1) अधिक-अवधि-दानम्

(2) अभिप्रेरणार्थं सर्वदा सरल-अभ्यास-कार्यम्

(3) उच्चस्तरीयैः छात्रैः सह मेलनम्

(4) उपयुक्त-रूपेण निर्मित-श्रेणिकृत-अभ्यासपत्रैः अभ्यास-कार्यम्

निर्देशः (प्र० सं० **112–120**) : निम्नलिखितानुच्छेदाधारितानां प्रश्नानां समुचितम् उत्तरं चिनुत—

एकदा स्वातिनामकः मुनिः पिपासया पीडितोऽभवत्। जलमूलम् अन्विष्यता तेन कश्चन आह्लादकरः शब्दः श्रुतः। तम् अनुसृत्य स अग्रे गतः। तत्र कुत्रचित् पर्वतात् पतन्तः जलबिन्दवः शुष्कपर्णानाम् उपरि पतित्वा मधुरं संगीतं जनयन्ति स्म। एतद् अवगत्य प्रेरितः सः तृषाकुलतां विस्मृत्य वेगेन आश्रमम् आगतवान्। सङ्गीतसाधनेषु प्रतिध्वनेः उत्पादनार्थं यः सूक्ष्मक्रमः आवश्यकः तम् अन्विष्टवान् सः। एवं यत् सङ्गीतसाधनं निर्मितवान् तस्य नाम मृदङ्ग इति।

एषा कथा भरतमुनेः नाट्यशास्त्रे वर्णिता। प्रतिध्वनिविज्ञानं विना सङ्गीतसाधनानां निर्माणम् असाध्यम् वर्तते। न केवलं सङ्गीतशास्त्रे अपितु गणितशास्त्रे भौतिके रसायने जीवविज्ञाने आयुर्वेदे धनुर्वेदे भूविज्ञाने खगोलविज्ञाने नक्षत्रविज्ञाने धातुविज्ञाने रत्नविज्ञाने विमानविज्ञाने वास्तुविज्ञाने शिल्पविज्ञाने, किं बहुना, सैन्यविज्ञानेऽपि गर्भाराध्ययनं कृत्वा अभूतपूर्वाः सिद्धयः सम्प्राप्ताः।

महर्षिपराशररचितवृक्षायुर्वेदे वृक्षाणां पर्णैः क्रियमाणाः विविधाः क्रियाः वर्णिताः यथा प्रकाशनिस्सारणप्रक्रिया, पर्णस्य अवान्तरभागाः, पर्णकणेषु स्थितः प्लाज्मा, बीजनिर्माणमादयः। रेखागणिते यः सिद्धान्तः 'पाइथोगोरस' इति नाम्ना विख्यातः, मूलतः सः सिद्धान्तः बोधायनाचार्येण शुल्वसूत्रेषु पूर्वमेव निरूपितः।

112. मधुर-सङ्गीतोत्पादनस्य कारणम् आसीत्

(1) जलमूलम्

(2) जलवेगः

(3) शुष्कपर्णोपरि पतिताः जलबिन्दवः

(4) आह्लादकरः शब्दः

113. "मृदङ्ग" इति सङ्गीतसाधनस्य आविष्कारकः अस्ति

(1) स्वातिनामकः मुनिः

(2) भरतमुनिः

(3) महर्षिपराशरः

(4) बोधायनाचार्यः

114. सङ्गीतसाधनानां निर्माणार्थम् अत्यावश्यकम् अस्ति

(1) गणितशास्त्रे सिद्धिः

(2) प्रतिध्वनिविज्ञानस्य ज्ञानम्

(3) सङ्गीतशास्त्राध्ययनम्

(4) भौतिकशास्त्रज्ञानम्

115. बीजनिर्माण-प्रक्रियासम्बद्धं वर्णनं प्राप्यते

(1) वृक्षायुर्वेदे

(2) जीवविज्ञाने

(3) नाट्यशास्त्रे

(4) सङ्गीतशास्त्रे

116. रेखागणित-सम्बद्धः 'पाइथोगोरस' इति सिद्धान्तः मूलतः दृश्यते

(1) नाट्यसूत्रेषु

(2) भौतिकविज्ञानसूत्रेषु

(3) गणितसूत्रेषु

(4) शुल्वसूत्रेषु

117. "न केवलं सङ्गीतशास्त्रे ... गभीराध्ययनं ... सिद्धयः सम्प्राप्ताः" इति वाक्ये कर्मपदम् अस्ति

(1) गभीरम्

(2) सम्प्राप्ताः

(3) सिद्धयः

(4) अध्ययनम्

118. "यत् सङ्गीतसाधनं निर्मितवान् ..." वाक्ये 'निर्मितवान्' क्रियापदस्य कर्तृपदम् अस्ति

(1) स्वातिः मुनिः

(2) भरतमुनिः

(3) मृदङ्ग

(4) यत्

119. अत्र 'अभूतपूर्वाः' इति पदम् अस्ति

(1) क्रियापदम्

(2) सर्वनामपदम्

(3) विशेषणपदम्

(4) विशेष्यपदम्

120. 'जनयन्ति स्म' इति क्रियाप्रयोगः अस्ति

(1) भूतकालार्थे

(2) लृट्लकारे

(3) वर्तमानकाले

(4) विधि-सन्दर्भे

परीक्षार्थिनः निम्नलिखित-भागस्य प्रश्नानाम् उत्तराणि तदैव दद्युः यदि तैः भाषा—II विकल्पे संस्कृतं चितं स्यात्।

भागः —V : भाषा—II

संस्कृतम्

निर्देशः (प्र० सं० **121–126**) : निम्नलिखितपद्यमाधारितानां प्रश्नानां समुचितम् उत्तरं चिनुत—

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति,
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः,
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥
सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन॥

121. 'दोषाः भवन्ति' के?
(1) निर्गुणाः
(2) निर्गुणज्ञाः
(3) गुणज्ञाः
(4) गुणाः

122. मूर्खेभ्यः 'रत्नम्' अस्ति
(1) सुभाषितम्
(2) जलम्
(3) पाषाणः
(4) अन्नम्

123. व्यवहारे यदा-कदा अपि न भवेत्
(1) ऋजुता
(2) औदार्यम्
(3) मृदुता
(4) कौटिल्यम्

124. मधुरं जलम् अपि 'अपेयं' भवति यदा ——— प्राप्नोति।
(1) निर्गुणम्
(2) समुद्रम्
(3) नदीम्
(4) गुणज्ञम्

125. श्लोके 'विधीयते' इति क्रियाप्रयोगः अस्ति
(1) भावम् अनुसृत्य
(2) कर्तृ-भावानुसारम्
(3) कर्मपदम् अनुसृत्य
(4) कर्तृपदम् अनुसृत्य

126. 'सारल्यम्' इति अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
(1) ऋजुता
(2) सत्यता
(3) औदार्यम्
(4) मृदुता

निर्देशः (प्र० सं० **127–141**) : प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत—

127. अधिगन्तारः प्रायः ज्ञान-निर्मातारः अपि भवन्ति। भाषा-कक्ष्यायां इदं साधयितुं कः समीचीनः उपायः?
(1) विभिन्नगतिविधीनां द्वारा नूतनसन्दर्भेषु भाषा-प्रयोगार्थम् अधिकाधिक-अवसराणां प्रदानम्
(2) पूर्वनिर्धारित-प्रायोजनात्मकं कार्यं प्रतिपुष्टिः च
(3) लक्ष्यभाषया सम्बद्ध-पाठ्यवस्तुनः अधिकाधिकं पठनम्
(4) छात्राणाम् अधिगम-क्षमता-विकासार्थम् अधिगम-सामग्र्याः उपलब्धिः

128. "छात्राः सहजतया लक्ष्यभाषया भाषणं कर्तुं समर्थाः भवेयुः" इत्यर्थं किं महत्त्वपूर्णम्?
(1) लिखित-मौखिक-परीक्षणम्
(2) दृश्यसाधनानां प्रयोगः
(3) छात्राः यथा इच्छन्ति तथैव कयापि भाषया भाषणं कुर्युः
(4) सर्वत्र लक्ष्यभाषया सम्भाषणार्थम् अभिप्रेरणा नूतनेषु च सन्दर्भेषु भाषाप्रयोग-अवसराणां प्रदानम्

129. सहजरूपेण भाषा-अधिगमन-सन्दर्भे महत्त्वपूर्णम् अस्ति

(1) अधिगत-शब्द-अधिकृत्य वाक्यनिर्माणम्

(2) लेखनम्

(3) कथनशैल्याः अपेक्षया अर्थस्पष्टीकरणम्

(4) अभिभावकानां वाक्यानां श्रवणम्

130. "छात्राः श्रुतसामग्रीम् अधिकृत्य विशिष्ट-टिप्पणीं लेखितुं समर्थाः भवेयुः" इत्यर्थं कृतगतिविधिः कथ्यते

(1) पुनर्स्मरणम्

(2) व्याख्यानम्

(3) सूचना-स्थानान्तरणम्

(4) भाविकथनम्

131. मौखिकी प्रश्नोत्तरी कस्य कौशलस्य अभ्यासस्य कृते समीचीना?

(1) पठनस्य

(2) शब्दज्ञानस्य

(3) भाषणस्य

(4) लेखनस्य

132. यदा छात्राः व्याकरणाध्ययनस्य भाषास्वरूपस्य च मध्ये सम्बन्धं प्रदर्शयन्ति तदा ते किं दर्शयन्ति?

(1) सम्प्रेषणोद्देश्यं विकासप्रक्रियां च

(2) व्याकरणाध्ययनम् अत्यधिकं महत्त्वपूर्णम्

(3) सम्प्रेषणार्थं व्याकरणज्ञानम् अनिवार्यम्

(4) लेखन-शैली व्याकरणज्ञानेन प्रभाविता भवति

133. अनेकेभ्यः छात्रेभ्यः लेखनकार्यम् अत्यन्तं जटिलकार्यम्। अतः अस्मिन् सन्दर्भे अध्यापकैः/अध्यापिकाभिः प्रथमं कुत्र अवधानं दातव्यम्?

(1) रुचि-वर्धनार्थं सरलकार्यं प्रति

(2) स्पष्ट-सम्प्रेषण-क्षमता-विकास-सन्दर्भे आवश्यक-व्याकरण-तत्त्व-अभ्यासं प्रति

(3) व्याकरण-सम्बद्ध-अभ्यासान् प्रति

(4) आत्मविश्वासम् उत्पादयितुं लक्ष्यभाषा-मातृभाषा-प्रयोगं प्रति

134. व्याकरणात्मकम् अनुदेशनं तदैव स्वाभाविकं मन्यते यदा

(1) लेखनात् भाषणात् वा पूर्वं व्याकरणाभ्यासार्थं प्रयत्नाः क्रियन्ते

(2) अध्यापकैः अल्पकालिक-व्याकरणकक्ष्या स्वीक्रियते

(3) छात्राः स्वयमेव लेखन-भाषण-समये सजगाः भूत्वा त्रुटि-संशोधनम् अपि कुर्वन्ति

(4) अध्यापकाः निरन्तरं सिद्धान्त-पाठने संलग्नाः भवन्ति

135. भाषा-शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया-सन्दर्भे समस्यानां समाधानं प्राप्तुम् अधिगमशैली महत्त्वपूर्णा। भाषा-शिक्षणोपागमार्थम् अपि अस्याः विशिष्टं स्थानम्। एतादृशी एका भाषा-शिक्षण-अधिगमशैली अस्ति

(1) मुद्रणोन्मुखी शैली

(2) केन्द्रीकृता शैली

(3) उच्चस्तरीया शैली

(4) शान्तिपूर्णा शैली

136. एकस्यां भाषा-कक्ष्यायां 'वृक्षः' इति पाठः पाठ्यते। छात्राः विभिन्नसमूहेषु विभक्ताः। सर्वे भिन्नं भिन्नं कार्यं कुर्वन्ति। एकः समूहः पाठ्यसामग्रीम् अधिकृत्य चित्राणि निर्माय लेखन-भाषण-कौशल-द्वारा कृतकार्यं प्रस्तौति। तस्य समूहस्य प्रदर्शनं केन सम्बद्धम्?

(1) अर्थग्रहणेन

(2) अवबोधनात्मक-अभिव्यक्तात्मक-कौशलेन

(3) चित्र-चित्रण-कौशलेन

(4) तथ्य-सङ्ग्रहणेन

137. तथ्यात्मक-गद्य-पाठस्य काव्यात्मकपाठस्य च मध्ये भेदः मन्यते। काव्यपाठः मुख्यतः सम्बद्धः अस्ति

(1) काव्यस्य मुख्यकथ्य-सन्दर्भे भावाभिव्यक्त्या बौद्धिकाभिव्यक्त्या च

(2) कवेः सन्देशस्य मूल्याङ्कनेन

(3) बौद्धिक-व्याख्यानेन

(4) प्रदत्त-सूचनासन्दर्भे वैयक्तिक-व्याख्यया

138. कस्यापि लेखस्य मूल्याङ्कनसन्दर्भे लेखस्य कः सः भागः यत्र सम्पूर्णस्य लेखस्य सारांशः पुनरावृत्तिं विना प्राप्यते यत्र च सम्पूर्णमहत्त्वपूर्णाः सूचनाः अपि दृश्यन्ते?

(1) मध्यभागः

(2) भूमिका

(3) निष्कर्षः

(4) द्वितीयः अनुच्छेदः

139. भाषा-शिक्षण-अधिगम-सन्दर्भे प्रौद्योगिक-उपकरणानाम् एकं विशिष्टं स्थानं दृश्यते। उच्चारण-शिक्षण-प्रक्रिया-सन्दर्भे किं समीचीनम् उदाहरणं न?

(1) भूमिका-निर्वहणम् उच्चारण-प्रदर्शनञ्च

(2) ध्वनि-मुद्रिका-उपयोगः

(3) श्रव्य-दृश्य-प्रस्तुति-द्वारा वर्णनम्

(4) श्वेत-फलकस्य प्रयोगः

140. कस्याश्चित् कक्ष्यायां प्रायः सर्वे छात्राः मातृभाषया एव व्यवहरन्ति। अतः अन्यभाषा-कक्ष्यायाः सन्दर्भे इदम् अवगन्तव्यं यत्

(1) छात्राः सुविधानुसारं लक्ष्यभाषया वदेयुः

(2) मातृभाषा-प्रयोगः सर्वदा निषिद्धः

(3) छात्रेभ्यः लक्ष्यभाषया व्यवहारः आवश्यकः न

(4) छात्राः परस्परं लक्ष्यभाषया व्यवहर्तुं प्रेरितव्याः

141. प्रायः छात्राः नूतनविषयान् अधिकृत्य स्वविचारान् प्रकटयितुं काठिन्यम् अनुभवन्ति। कारणम् अस्ति यत् ते नूतनान् अथवा अधिकान् शब्दान् न जानन्ति। एतदर्थं कः उपायः?

(1) छात्राः शब्दार्थान् स्मरेयुः

(2) छात्राः श्रुतलेखस्य अधिकाधिकम् अभ्यासं कुर्युः

(3) छात्राः शब्दसमृद्ध्यर्थं वैविध्यपूर्णसाहित्यं पठितुं प्रेरितव्याः

(4) छात्रस्तरानुगुणम् एव विषयाः चेतव्याः

निर्देशः (प्र० सं० **142–150**) : निम्नलिखितानुच्छेदाधारितानां प्रश्नानां समुचितम् उत्तरं चिनुत—

अस्ति कर्मपुरनाम्नि नगरे प्रच्छन्नभाग्य-नामधेयः कश्चित् कुमारः। बाल्ये वयसि विद्यापराङ्मुखः स केनचित् दुष्टबुद्धिनाम्ना चौरेण सह चौर्यकर्मणि निरतः सञ्जातः। एकदा स दुष्टबुद्धिना सार्धं कस्यचित् श्रेष्ठिनः गेहे धनहरणार्थं ग्रामान्तरं प्रस्थितः।

अथ व्रजन्तौ तौ गर्तसङ्कुले मार्गे क्रीडतः कांश्चित् बालकान् प्रेक्ष्य अवदताम्—"भो भो बालकाः! कथमत्र नतोन्नते विषमे मार्गे क्रीडथ? यदि कश्चित् गर्ते पतेत् तर्हि स विकलाङ्गो भूत्वा चिरं क्लेशम् अनुभवेत्।" तच्छ्रुत्वा तेषु कश्चित् उद्दण्डः बालकः उवाच—"अयि भो! यद्येवं तर्हि कथं भवन्तौ सुपथं परित्यज्य अनेन कुपथेन गन्तुं प्रवृत्तौ? अपि इदं श्रेयस्करम्?"

अनेन वचसा प्रतिहतान्तःकरणः प्रच्छन्नभाग्यः अचिन्तयत्—किम् इदं वचनं विशेषेण माम् एव लक्ष्यीकरोति? अहो! कुमार्गम् आश्रितस्य मम कीदृशी क्लेशपरम्परा। गुरूपदेशेन इव अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते। अद्यप्रभृति पापपथं त्यजामि इति विचिन्त्य मित्रं दुष्टबुद्धिम् अवदत्—"सखे! यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि, तर्हि साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्।"

142. बाल्यकाले विद्यापराङ्मुखः कः अभवत्?

(1) श्रेष्ठी

(2) प्रच्छन्नभाग्यः

(3) दुष्टबुद्धिः

(4) उद्दण्डः बालः

143. मार्गे ——— केचन बालाः दृष्टाः।

(1) उद्दण्डबालकेन

(2) दुष्टबुद्धिनाम्ना चौरेण

(3) प्रच्छन्नभाग्येन

(4) प्रच्छन्नभाग्येन दुष्टबुद्धिना च

144. बालाः कुत्र क्रीडन्ति स्म?

(1) नतोन्नते मार्गे

(2) सुपथे

(3) विद्यालयप्राङ्गणे

(4) क्रीडाङ्गणे

145. कः पापपथं त्यक्तुम् इच्छति?

(1) बालकः

(2) प्रच्छन्नभागधेयः

(3) श्रेष्ठी

(4) दुष्टबुद्धिः

146. उद्दण्डः बालकः ——— लक्ष्यीकृत्य वदति—"अयि भो! ... भवन्तौ ... प्रवृत्तौ?"

(1) दुष्टबुद्धिम्

(2) मित्राणि

(3) प्रच्छन्नभाग्यम्

(4) प्रच्छन्नभाग्यं दुष्टबुद्धिं च

147. "नतोन्नते विषमे मार्गे क्रीडथ" इति वाक्ये विशेष्यपदम् अस्ति

(1) मार्गे

(2) नतोन्नते

(3) उन्नते

(4) विषमे मार्गे

148. अत्र 'अनुभवेत्' क्रियापदस्य कर्तृपदम् अस्ति

(1) दुष्टबुद्धिः

(2) सः

(3) प्रच्छन्नभाग्यः

(4) बालकः

149. 'मम चक्षुषी समुन्मीलिते' वाक्यांशे 'मम' सर्वनामपदं प्रयुक्तम् अस्ति

(1) उद्दण्डबालकाय

(2) दुष्टबुद्धि-कृते

(3) मित्रद्वयाय

(4) प्रच्छन्नभाग्याय

150. 'निन्दितम्' इत्यर्थे अनुच्छेदे किं पदं प्रयुक्तम्?

(1) गर्हितम्

(2) गर्तसङ्कुलः

(3) पापपथम्

(4) क्लेशपरम्परा

SPACE FOR ROUGH WORK

अवधानपूर्वकम् एते निर्देशाः मनसि धारणीया—

1. प्रत्येकं प्रश्नार्थं चत्वारि वैकल्पिकोत्तराणि निर्दिष्टानि; तेषु समुचितोत्तरप्रदानार्थं OMR उत्तर-पुस्तिकायाः पृष्ठे-2 **केवलम् एकमेव वृत्तं पूर्णरूपेण नील/कृष्णवर्णिकया बाल-पाइन्ट-लेखन्याः** प्रपूरणीयम्। एकवारम् उत्तराङ्कनान्तरं न तत्परिवर्तयितुं शक्यते।

2. परीक्षार्थिभिः उत्तर-पत्रं नैव तिर्यक्करणीयम्, न च कथंकारमपि तद् अन्यथाप्रकारेण अङ्कनीयम्। परीक्षार्थी स्वीयानुक्रमाङ्कम् उत्तर-पत्रे निर्धारितस्थानातिरिक्तम् अन्यत्र कुत्रापि न लिखेत्।

3. परीक्षा-पुस्तिकायाः उत्तर-पत्रकस्य च प्रयोगः सावधानं करणीयः। कस्यामपि परिस्थितौ (केवलं तां परिस्थितिं विहाय यदा परीक्षा-पुस्तिकायाः उत्तर-पत्रस्य च सङ्केतके सङ्ख्यायां वा भिन्नता दृश्यते) द्वितीय-परीक्षा-पुस्तिका नोपलभ्या एव।

4. परीक्षा-पुस्तिकायाम् उत्तर-पत्रे च प्रदत्त-सङ्केतक-सङ्ख्या परीक्षार्थिभिः उपस्थितिपत्रके सम्यक्रीत्या अवश्यमेव लेखनीया।

5. प्रवेशपत्रं विहाय अन्य-मुद्रित-लिखित-पाठ्यसामग्री कर्गदचिटिकां 'पेजरम्' इति चलदूरभाषां, विद्युत्-उपकरणानि अथवा कामपि अन्यसामग्रीं परीक्षाभवनं कक्षं वा नेतुम् अनुमतिः न अस्ति।

6. निरीक्षणसमये परीक्षार्थिभिः प्रवेशपत्रं निरीक्षकाय अवश्यं दर्शनीयम्।

7. अधीक्षकस्य निरीक्षकस्य वा अनुमतिं विना परीक्षार्थिभिः स्थानं न परित्यक्तव्यम्।

8. कार्यरतनिरीक्षकाय उत्तर-पत्रं दत्त्वा उपस्थितिपत्रके च हस्ताक्षरं पुनः कृत्वा एव परीक्षार्थिभिः परीक्षाभवनं कक्षं वा परित्यक्तव्यं न अन्यथा। यदि केनापि परीक्षार्थिना उपस्थितिपत्रिकायां पुनः हस्ताक्षरं न क्रियते तर्हि 'परीक्षार्थिना उत्तर-पत्रकं न दत्तम्' इति अभिप्रायः। इदम् अनुचितसाधनानां प्रयोगस्य रूपम् इति मन्तव्यम्।

9. वैद्युत-हस्तचालित-परिकलकस्य उपयोगः सर्वथा वर्जितः।

10. परीक्षाभवने कक्षे वा अनुकूलाचरणाय परीक्षार्थिनः सङ्घटनस्य सर्वैः नियमैः विनियमैः वा नियमिताः। अनुचितसाधनानाम् उपयोगेन सम्बद्धाः निर्णयाः सङ्घटनस्य नियम-विनियम-अनुवर्तनीयाः एव।

11. कस्यामपि परिस्थितौ परीक्षा-पुस्तिकायाः उत्तर-पत्रकस्य वा कोऽपि भागः पृथक् न करणीयः।

12. **परीक्षासम्पन्नानन्तरं परीक्षार्थिनः परीक्षाभवन-परित्यजनात् पूर्वं उत्तर-पत्रं कक्षनिरीक्षकाय अवश्यमेव प्रदास्यन्ति। परीक्षार्थिनः इमाम् उत्तर-पुस्तिकां नेतुम् अनुमताः।**

READ THE FOLLOWING INSTRUCTIONS CAREFULLY :

1. Out of the four alternatives for each question, only one circle for the correct answer is to be darkened completely with Blue/Black Ballpoint Pen on **Side-2** of the OMR Answer Sheet. The answer once marked is not liable to be changed.
2. The candidates should ensure that the Answer Sheet is not folded. Do not make any stray marks on the Answer Sheet. Do not write your Roll No. anywhere else except in the specified space in the Answer Sheet.
3. Handle the Test Booklet and Answer Sheet with care, as under no circumstances (except for discrepancy in Test Booklet Code or Number and Answer Sheet Code or Number), another set will be provided.
4. The candidates will write the correct Test Booklet Code and Number as given in the Test Booklet/Answer Sheet in the Attendance Sheet.
5. Candidates are not allowed to carry any textual material, printed or written, bits of papers, pager, mobile phone, electronic device or any other material except the Admit Card inside the Examination Hall/Room.
6. Each candidate must show on demand his/her Admit Card to the Invigilator.
7. No candidate, without special permission of the Superintendent or Invigilator, should leave his/her seat.
8. The candidates should not leave the Examination Hall without handing over their Answer Sheet to the Invigilator on duty and sign the Attendance Sheet twice. Cases where a candidate has not signed the Attendance Sheet, a second time will be deemed not to have handed over the Answer Sheet and dealt with as an unfair means case.
9. Use of Electronic/Manual Calculator is prohibited.
10. The candidates are governed by all Rules and Regulations of the Board with regard to their conduct in the Examination Hall. All cases of unfair means will be dealt with as per Rules and Regulations of the Board.
11. No part of the Test Booklet and Answer Sheet shall be detached under any circumstances.
12. **On completion of the test, the candidate must hand over the Answer Sheet to the Invigilator in the Room/Hall. *The candidates are allowed to take away this Test Booklet with them.***

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें :

1. प्रत्येक प्रश्न के लिए दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर के लिए OMR उत्तर-पत्र के **पृष्ठ-2** पर केवल एक वृत्त को ही पूरी तरह नीले/काले बॉलपॉइंट पेन से भरें। एक बार उत्तर अंकित करने के बाद उसे बदला नहीं जा सकता है।
2. परीक्षार्थी सुनिश्चित करें कि इस उत्तर-पत्र को मोड़ा न जाए एवं उस पर कोई अन्य निशान न लगाएँ। परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक उत्तर-पत्र में निर्धारित स्थान के अतिरिक्त अन्यत्र न लिखें।
3. परीक्षा पुस्तिका एवं उत्तर-पत्र का ध्यानपूर्वक प्रयोग करें, क्योंकि किसी भी परिस्थिति में (केवल परीक्षा पुस्तिका एवं उत्तर-पत्र के संकेत या संख्या में भिन्नता की स्थिति को छोड़कर) दूसरी परीक्षा पुस्तिका उपलब्ध नहीं करायी जाएगी।
4. परीक्षा पुस्तिका/उत्तर-पत्र में दिए गए परीक्षा पुस्तिका संकेत व संख्या को परीक्षार्थी सही तरीके से हाजिरी-पत्र में लिखें।
5. परीक्षार्थी द्वारा परीक्षा हॉल/कक्ष में प्रवेश-कार्ड के सिवाय किसी प्रकार की पाठ्य-सामग्री, मुद्रित या हस्तलिखित, कागज की पर्चियाँ, पेजर, मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण या किसी अन्य प्रकार की सामग्री को ले जाने या उपयोग करने की अनुमति नहीं है।
6. पूछे जाने पर प्रत्येक परीक्षार्थी, निरीक्षक को अपना प्रवेश-कार्ड दिखाएँ।
7. अधीक्षक या निरीक्षक की विशेष अनुमति के बिना कोई परीक्षार्थी अपना स्थान न छोड़ें।
8. कार्यरत निरीक्षक को अपना उत्तर-पत्र दिए बिना एवं हाजिरी-पत्र पर दुबारा हस्ताक्षर किए बिना परीक्षार्थी परीक्षा हॉल नहीं छोड़ेंगे। यदि किसी परीक्षार्थी ने दूसरी बार हाजिरी-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए, तो यह माना जाएगा कि उसने उत्तर-पत्र नहीं लौटाया है और यह अनुचित साधन का मामला माना जाएगा।
9. इलेक्ट्रॉनिक/हस्तचालित परिकलक का उपयोग वर्जित है।
10. परीक्षा हॉल में आचरण के लिए परीक्षार्थी बोर्ड के सभी नियमों एवं विनियमों द्वारा नियमित हैं। अनुचित साधनों के सभी मामलों का फैसला बोर्ड के नियमों एवं विनियमों के अनुसार होगा।
11. किसी हालत में परीक्षा पुस्तिका और उत्तर-पत्र का कोई भाग अलग न करें।
12. परीक्षा सम्पन्न होने पर, परीक्षार्थी कक्ष/हॉल छोड़ने से पूर्व उत्तर-पत्र निरीक्षक को अवश्य सौंप दें। ***परीक्षार्थी अपने साथ इस परीक्षा पुस्तिका को ले जा सकते हैं।***